12.05 hrs.

SUGARCANE CONTROL (ADDITIONAL POWERS) BILL*

The Minister of Food and Agriculture (Shri S. K. Patil): I beg to move for leave to introduce a Bill to empower the Central Government to amend the Sugarcane (Control) Order, 1955, with retrospective effect in respect of certain matters.

Mr. Speaker: The question is:

"That leave be granted to introduce a Bill to empower the Central Government to amend the Sugarcane (Control) Order, 1955, with retrospective effect in respect of certain matters."

The motion was adopted.

Shri S. K. Patil: I introduce the Bill.

Shri U. M. Trivedi (Mandsaur): On a point of information before the hon. Minister introduces the Bill...

Mr. Speaker: The Bill has been introduced.

Shri U. M. Trivedi: He will seek leave for introducing it.

Mr. Speaker: He has sought the leave of the House and the leave has been granted. He has introduced the Bill.

Shri U. M. Trivedi: He has moved a motion that leave be granted.

Mr. Speaker: He has got the leave and he has already introduced the Bill.

Shri U. M. Trivedi: I do not know. Anyway, I wanted to ask why it has become necessary to introduce a Bill for amending the Sugarcane (Control) Order. Why cannot the Order itself be amended?

Shri S. K. Patil: It has to be given retrospective effect. Under legal advice, it could not be done without a Bill. Hence a Bill has got to be passed.

12.07 hrs.

MOTION *RE*: THIRD FIVE YEAR PLAN—*contd.*

Mr. Speaker: The House will now resume further discussion of the following motion by Shri Nath Pai on the 22nd June, 1962, namely:—

"That this House takes note of the serious shortfalls in the targets of the Third Five Year Plan and the growing misapprehensions in the country about the implementation of the Third Five Year Plan",

and also further consideration of the following motion moved by Shri R. R. Morarka on the 25th August, 1962, namely:—

"That this House takes note of the progress of the Third Year Plan as indicated in the statement laid on the Table of the House on the 22nd August, 1962 and generally approves of the measures taken to ensure its successful implementation."

Out of 10 hours allotted, 4 hours and 55 minutes have been exhausted and 5 hours and 5 minutes remain. Shri Hem Barua.

12.7½ hrs.

RE: MOTION FOR ADJOURNMENT

श्री कछवाय (देवास) : अध्यक्ष महोदय मैंने एक ऐडजोर्नमेंट मोशन दिया था लेकिन यह नामंजूर कर दिया गया है। उज्जैन में १०,००० विद्यार्थी शिक्षा की भीक मांग रहे हैं लेकिन उन की बात सुनी नहीं जाती और वह आंदोलन करने पर विवश हो गये हैं ...

Mr. Speaker: Order, Order. The Member should resume his seat.

---

* Published in the *Gazette of India Extraordinary*, Part II—Section 2, dated 27th August, 1962.

श्री बड़े (खारगोन) : अध्यक्ष महोदय ....

अध्यक्ष महोदय : अब वह बैठ गये तो दूसरे साहब खड़े हो गये । अब क्या इस हाउस का काम इस तरह से चलना चाहिये ?

श्री बड़े : अध्यक्ष महोदय, मेरी बिनती है कि इस बारे में जब स्टेट गवर्नमेंट से कहा जाता है तो वह कहती है कि यह सैंटर का मामला है और यहां ऐडजोर्नमेंट मोशन नामंजूर कर दिया जाता है...

अध्यक्ष महोदय : आप मेरे पास आइये और इस पर गौर किया जाय कि आया यह सैंटर के पास है या किस के पास है लेकिन यहां इस तरह से कार्यवाही में बाधा डालना तो उचित नहीं है ।

श्री बड़े : अध्यक्ष महोदय मेरी बिनती है.....

अध्यक्ष महोदय : आप मेरी बिनती तो सुनिये । मैंने कहा कि अगर आप को ऐतराज है तो आप मेरे पास आइये और बातचीत कर के हम उस पर फैसला कर लेंगे कि यह मामला सैंटर का है या किस का है ।

श्री बड़े : वह सब पत्र में प्रकाशित हो चुका है । श्रीमान् जो कोई ध्यान ही नहीं देते ।

Mr. Speaker: Now Shri Hem Barua.

श्री बागड़ी (हिसार) : स्पीकर साहब, २५,००० रुपया रीजनाना प्रइम मिनिस्टर पर खर्च होता है । हिन्दुस्तान जैसे गरीब मुल्क में जहां कि एक आदमी की २५ रुपये मासिक आमदनी भी न हो वहां प्राइम मिनिस्टर के ऊपर २५,००० रुपया रोजाना खर्च होना कहां तक ठीक है ? यह सवाल बड़ा महत्वपूर्ण है ....

अध्यक्ष महोदय : आर्डर आर्डर । मैं ने इन मेम्बर साहबान को बहुत दफे कहा कि यहां इस तरह की मदाखलत करना दुरुस्त नहीं है मगर न मालूम इस तरह से खड़े होने में और यहां की कार्यवाही में दखल देने में क्या खुशी प्राप्त करते हैं । ऐसा करना ठीक नहीं है । माननीय सदस्यों को मैं ने कई दफे कहा है और मैं फिर अपील करता हूं कि वह इस में मुझे सहयोग दें ताकि हम यहां पर अनुशासन कायम रख सकें । अगर किसी मेम्बर को एतराज हो तो वह मेरे पास आये । अगर वह मुझे कनविस करा सके तो मैं उसको फौरन यहां रखने की तैयार हो जाऊंगा और मुझे कभी भी ऐतराज नहीं होगा । लेकिन किसी मेम्बर ने कभी यह कोशिश नहीं की कि मेरे पास आयें और आ कर दलील दें और मुझे कनविस कराने की कोशिश करें । उन का क्या यही मतलब होता है कि इस जगह एक दम से बीच में आवाज उठा दें? आयें मेरे पास मुझे दलील दें और कनविस करें लेकिन आज तक किसी मेम्बर ने यह कोशिश नहीं की । उस के बाद मेरे पास आकर बतलायें कि जो आपने रीजंस दियें ठीक नहीं हैं और बात यह है तो मैं उसे कंसिडर करने को तैयार हूं ।

Shri Ram Sevak Yadav *rose*—

Mr. Speaker: Order, Order. Shri Hem Barua.

श्री रामसेवक यादव (बाराबंकी) : अध्यक्ष महोदय, मेरा एक निवेदन है कृपया उस को सुन लें ।

अध्यक्ष महोदय : अब इस के लिये तो मैं इजाजत नहीं दे सकता और कोई बात कहनी हो तो कहें ।

श्री रामसेवक यादव : जो यह काम रोको प्रस्ताव आदि दिये जाते हैं यदि

उनका हवाला यहां पर दें तो इस तरह की स्थिति पैदा न होगी ।

अध्यक्ष महोदय : अब मेरे पास कितना स्टाफ है कुछ इसका भी ख्याल है ? साढ़े दस बजे से दस बज कर पचास मिनट तक पांच, पांच मिनट के बाद बागड़ी साहब के पांच नोटिस आते रहे । अब ग्यारह बजने में सिर्फ दस मिनट रहते हैं, आप ही बतलाइये कि मैं उन को कंसिडर करूं या मैं उन के जवाब लिख कर उस दस मिनट में भेज सकता हूं ? मैं बागड़ी जी से फिर कहूंगा कि आप अपने नोटिसेज वगैरह साढ़े दस बजे तक दे दीजिये । आप इस पर पाबन्द रहिये और उस हालत में मैं आप को लिख कर उन के जवाब दे दूंगा । इस से ज्यादा मैं नहीं कर सकता ।

श्री रामसेवक यादव : मेरे कहने का आशय यह था कि कोई कार्य-स्थगन प्रस्ताव होगा तो जो माननीय सदस्य इस सदन के हैं वह उसे अपने दिमाग से देंगे और अध्यक्ष महोदय अपनी तरह से उस पर फैसला देंगे और सम्बन्धित माननीय सदस्य को उस पर ऐतराज होगा । इस लिये मैं ने कहा था कि अगर उस का यहां पर हवाला दे दिया जाये तो यह जो इतना समय नष्ट होता है यह बच जाया करेगा ।

12.12 hrs.

MOTION *RE*: THIRD FIVE YEAR PLAN—*contd.*

Mr. Speaker: Shri Hem Barua.

Shri Hem Barua (Gauhati): The success of the Plan depends largely on periodic reappraisal—pause and think, think and re-appraise. This might result in a change of strategy, but the change in strategy does not and must not mean the abandonment of the long-term basic objectives.

It is not enough to say that our broad strategy is right, but it must be capable of adjusting itself to suit changing economic conditions also.

Whatever that might be, this is a fact that our Plan has entered into deep waters, and it is facing rough weather. A broad suggestion to this effect was made in the Economic Survey of 1961. It anticipated it, and if I may quote it:

> "The prompt utilization of assistance from a number of sources and a variety of requirements necessarily poses problems which would need increasing attention."

These problems were visualised, but I would say that these problems are the legacy of the problems with which the Second Plan was confronted.

The Second Plan had its own pitfalls, there is no doubt about it. It tried to increase the national income, and I would say that the test of a Plan lies in its capacity to raise the national income. The Second Plan fixed the target as the raising of the national income by at least 25 per cent, but ultimately it was less than 20 per cent. The Plan is a continuous process, and at the same time, the failures of the Plan have a tendency to perpetuate themselves in a parallel chain. This is what has happened so far as as this Plan is concerned.

In this connection, may I quote a Swedish economist who has said:

> "The reader may have recalled that the word 'plan' has a double meaning. It can mean intention, it can mean central co-ordination."

When we read the preamble to our Plan we are convinced of the basic objective of the Plan, the intentions of the Government, the intentions of the planners, but intentions, unless they are buttressed by actual performance, are like paper boats that get buffeted easily.

So, what about the actual performance? To achieve a good performance, there should be central co-ordination, but unhappily enough there is no central co-ordination like